कक्षा-6 हिंदी (वसंत भाग-1)

पाठ-13.

मैं सबसे छोटी होऊँ

- सुमित्रा नंदन पंत

शब्दार्थ-

अंचल	- आँचल	गात	- शरीर
मात	- माँ	छलती	- धोखा देना
कर	- हाथ	निस्पृह	- इच्छा रहित
सज्जित	- सजाकर	निर्भय	- निडर

प्रश्न-अभ्यास

कविता से—

प्र॰1. कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना क्यों की गई है?

उत्तर— घर के सबसे छोटे बच्चे को घर के सभी लोग का प्यार और दुलार सबसे ज्यादा मिलता है खासकर माँ के साथ तो उसका जुड़ाव कुछ अधिक ही होता है। इसलिए कविता में सबसे छोटे होने की कल्पना की गई है।

प्र॰2. कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' क्यों कहा गया है? क्या तुम भी हमेशा छोटे बने रहना पसंद करोगे?

उत्तर— कविता में 'ऐसी बड़ी न होऊँ मैं' इसलिए कहा गया है क्योंकि बड़ी होकर बच्ची अपनी माँ का प्यार नहीं खोना चाहती। वह हमेशा अपनी माँ के आँचल के साए में रहना चाहती है। ऐसे बड़े होने से क्या लाभ जिसमें

माँ के स्नेह से वंचित होना पड़े। हाँ, मैं भी हमेशा छोटे बने रहना पसंद करूँगी।

प्र०३. आशय स्पष्ट करो—

हाथ पकड़ फिर सदा हमारे
साथ नहीं फिरती दिन-रात।

उत्तर— प्रस्तुत पंक्तियों का आशय यह है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं वैसे-वैसे माँ का साथ छूट जाता है। माँ हमेशा हमारे साथ नहीं रह पाती है।

प्र०4. अपने छुटपन में बच्चे अपनी माँ के बहुत करीब होते हैं। इस कविता में नज़दीकी की कौन-कौन सी स्थितियाँ बताई गई हैं?

उत्तर— इस कविता में नज़दीकी की निम्नलिखित स्थिति बताई गई है—

माँ अपने बच्चे को गोदी में सुलाती है, हमेशा अपने आँचल के साए में रखती है। अपने हाथ से खाना-खिलाना, नहाना-धुलाना, सजाना-सँवारना आदि कार्य करती है।

✡ भाषा की बात—

प्र॰1. नीचे दिए गए शब्दों में अन्तर बताओ, उनमें क्या फर्क है?

स्नेह - प्रेम
शांति - सन्नाटा
धूल - राख
ग्रह - गृह
निधन - निर्धन
समान - सामान

उत्तर—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
स्नेह	दुलार	प्रेम	प्यार
शांति	शांत (चुपचाप)	सन्नाटा	डरावनी चुप्पी
धूल	मिट्टी या बालू का कण	राख	किसी वस्तु का जला भाग
ग्रह	नक्षत्र	गृह	घर
निधन	मृत्यु	निर्धन	गरीब
समान	बराबर	सामान	वस्तु

प्र॰2. कविता में 'दिन-रात' शब्द आया है। दिन रात का विलोम है। तुम ऐसे चार शब्दों के जोड़े सोचकर लिखो जो विलोम शब्दों से मिलकर बने हों। जोड़ों के अर्थ को समझने के लिए वाक्य भी बनाओ।

उत्तर— जीवन - मरण - जीवन मरण ईश्वर के हाथ में है।
लाभ - हानि - व्यापार में लाभ-हानि होता ही रहता है।
सुख - दुःख - सुख-दुःख जीवन की सच्चाई है।
मित्र - शत्रु - आज के युग में मित्र-शत्रु की पहचान करना कठिन है।